

1

कलम व्यापार नहीं भविष्य है



मैत्रीय त्रिपाठी

प्र.स्ना.शि. संस्कृत, के.वि. कोडरमा



जा रही थी मनन करती मैं थोड़ा सकुचाई,
खड़े हुए नुक्कड़ पर मेरा मन व्यथित हुआ मेरे भाई,
जब कलम सर्जक राष्ट्र में, मेरे समक्ष,
एक छोटा बच्चा कलम बेचने आया।

बगल के हाथों बेच उसने 5 रुपये कमाया,
दृश्य अनोखा देख कलेजा अन्दर से भर आया,
हाथों में उसके कलम और वीणा वादिनी का मंदिर दोनों सामने पाया,
हाया! सोने की चिड़िया को गिद्धों ने कैसा नज़र लगाया।

माँ सरस्वती और उसके बीच जो अन्तर मैंने पाया,
सदियों की गुलामी का असर आँखों के आगे आया,
यही तो मूल मंत्र है जिसे सबने अपनाया,
मैकॉले ने गुरुकुल तो खिलजी ने नालंदा जलाया।

अशिक्षा और दबाव ने जातियों को भेंट चढ़ाया,
गाँव गाँव की समृद्धि को ऐसा सेंध लगाया,
सृजनकर्ता को जबरन भूख से मजबूर बनाया
संसाधनों को लूट थेम्स और गज़नी शहर बसाया।

बच्चा जितना अधिक कलम बेचता नज़र आया,
चेहरे पर उसके आज भोजन मिल जाने का आभा छाया,
फिर मन ने अद्भुत प्रश्न उठाया,
आजाद हुए तो दशकों बीत गए पर मानसिक गुलामी ना मिट पाया
नज़र बगल के विद्यालय पर पड़ी, जहाँ एक बच्चा प्लेट लेकर आया
भोजन मिला उसने मन से पेट भर खाना खाया
दोनों में, मैंने उतना अन्तर नहीं पाया,
एक ने कमा कर खाया, एक ने विद्यालय आकर खाया।

शून्य संवेदनाओं का दृश्य आँखों के सामने आया,
आज़ादी के 7 दशकों में हमने क्या कमाया,
अगली पीढ़ी के हाथों में केवल खाने का प्लेट थमाया
एक बच्चे ने कलम से व्यापार चलाया और एक कलम लेकर खाना खाने आया।

पढ़ा था मैंने कहीं,
तुमने मुझे अनाज दिया बस एक दिन मैंने खाया,
तुमने अनाज उगाना सिखाया मैंने खुद भी खाया,
औरों को भी खिलाया।
उगाने की हमारी संस्कृति थी जिसे सबने मिलकर मिटाया
गाँव-गाँव की अर्थव्यवस्था को पूरा सेंध लगाया।

जिस दिन दोनों बच्चों को कलम ने रास्ता दिखाया,
समझना होगा तब माँ भारती का स्वर्णिम युग आया,
हर बेड़ियों को तोड़ने का प्रण जिस दिन नाज़ुक कंधों ने उठाया
समझ लेना सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत का स्वर्णिम पंख फहराया ॥

जय हिंद
जय भारत ॥